

रविवार 15 जनवरी, 2023

विषय — जिंदगी

स्वर्ण पाठ: यूहन्ना 17: 3

"और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने।"

उत्तरदायी अध्ययन: 2 कुरिन्थियों 5: 1-8

- 1 क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थायी है।
- 2 इस में तो हम कराहते, और बड़ी लालसा रखते हैं; कि अपने स्वर्गीय घर को पहिन लें।
- 3 कि इस के पहिनने से हम नंगे न पाए जाएं।
- 4 और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कराहते रहते हैं; क्योंकि हम उतारना नहीं, वरन और पहिनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए।
- 5 और जिस ने हमें इसी बात के लिये तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिस ने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है।
- 6 सो हम सदा ढाढ़स बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं।
- 7 क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।
- 8 इसलिये हम ढाढ़स बान्धे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यूहन्ना 1: 1-4

- 1 सेआदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।
- 2 यही आदि में परमेश्वर के साथ था।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।
- 4 उस में जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।

2. अय्यूब 33: 4

- 4 मुझे ईश्वर की आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की सांस से मुझे जीवन मिलता है।

3. भजन संहिता 36: 7-9

- 7 हे परमेश्वर तेरी करुणा, कैसी अनमोल है! मनुष्य तेरे पंखों के तले शरण लेते हैं।
- 8 वे तेरे भवन के चिकने भोजन से तृप्त होंगे, और तू अपनी सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा।
- 9 क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है; तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएंगे॥

4. मत्ती 4: 1-4, 11

- 1 तब उस समय आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से उस की परीक्षा हो।
- 2 वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, अन्त में उसे भूख लगी।
- 3 तब परखने वाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।
- 4 उस ने उत्तर दिया; कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।
- 11 तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उस की सेवा करने लगे॥

5. यूहन्ना 6: 1-3, 26 (से 1st.), 27, 40 (से.), 63

- 1 इन बातों के बाद यीशु गलील की झील अर्थात् तिबेरियास की झील के पास गया।
- 2 और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्योंकि जो आश्चर्य कर्म वह बीमारों पर दिखाता था वे उन को देखते थे।
- 3 तब यीशु पहाड़ पर चढ़कर अपने चेलों के साथ वहां बैठा।
- 26 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया।
- 27 नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा, क्योंकि पिता, अर्थात् परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी है।

- 40 क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है, कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा।
- 63 आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आत्मा है, और जीवन भी हैं।

6. यूहन्ना 5: 24-26

- 24 मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।
- 25 मैं तुम से सच सच कहता हूं, वह समय आता है, और अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएंगे।
- 26 क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे।

7. प्रेरितों के काम 20: 7-12

- 7 सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से बातें की, और आधी रात तक बातें करता रहा।
- 8 जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे, उस में बहुत दीये जल रहे थे।
- 9 और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था, और जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो वह नींद के झोंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया।
- 10 परन्तु पौलुस उतरकर उस से लिपट गया, और गले लगाकर कहा; घबराओ नहीं; क्योंकि उसका प्राण उसी में है।
- 11 और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक उन से बातें करता रहा, कि पौ फट गई; फिर वह चला गया।
- 12 और वे उस लड़के को जीवित ले आए, और बहुत शान्ति पाई॥

8. प्रेरितों के काम 17: 22-28

- 22 तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़ा होकर कहा; हे अथेने के लोगों मैं देखता हूं, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो।
- 23 क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि अनजाने ईश्वर के लिये। सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं।

- 24 जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता।
- 25 न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है।
- 26 उस ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उन के ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को इसलिये बान्धा है।
- 27 कि वे परमेश्वर को ढूँढ़ें, कदाचित उसे टटोल कर पा जाएं तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं!
- 28 क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश भी हैं।

9. नीतिवचन 11: 30 (से;)

- 30 धर्मी का प्रतिफल जीवन का वृक्ष होता है।

10. नीतिवचन 4: 20-23

- 20 हे मेरे पुत्र मेरे वचन ध्यान धरके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा।
- 21 इन को अपनी आंखों की ओट न होने दे; वरन अपने मन में धारण कर।
- 22 क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।
- 23 सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 331 : 1 (भगवान)-6

ईश्वर दिव्य जीवन है, और जीवन उन रूपों तक ही सीमित नहीं है जो इसे प्रतिबिंबित करते हैं जैसे पदार्थ इसकी छाया में है। यदि जीवन नश्वर मनुष्य या भौतिक वस्तुओं में होता, तो यह उनकी सीमाओं के अधीन होता और मृत्यु में समाप्त होता। जीवन मन है, निर्माता ने अपनी रचनाओं में इसे प्रतिबिंबित किया।

2. 200 : 9-13

जीवन है, था, और हमेशा सामग्री से स्वतंत्र रहेगा; क्योंकि जीवन ईश्वर है, और मनुष्य ईश्वर का विचार है, भौतिक रूप से नहीं बल्कि आध्यात्मिक रूप से, और वह क्षय और धूल के अधीन नहीं है।

3. 289 : 31-2

मनुष्य मांस की संतान नहीं है, बल्कि आत्मा की, - जीवन की, पदार्थ की नहीं। क्योंकि जीवन ईश्वर है, जीवन को शाश्वत, स्वयंभू होना चाहिए। जीवन वह चिरस्थायी "मैं हूँ" है, वह अस्तित्व जो था और है और रहेगा, जिसे कोई मिटा नहीं सकता।

4. 487 : 27-1

यह समझ कि जीवन ईश्वर है, आत्मा, जीवन की मृत्यु रहित वास्तविकता, उसकी सर्वशक्तिमानता और अमरता में हमारे विश्वास को मजबूत करके हमारे दिनों को लंबा कर देती है।

यह विश्वास एक समझे हुए सिद्धांत पर निर्भर करता है। यह सिद्धांत संपूर्ण रोगग्रस्त बनाता है, और चीजों के स्थायी और सामंजस्यपूर्ण चरणों को सामने लाता है।

5. 283 : 6-31

माइंड "कल, और आज, और हमेशा" जीवन, प्रेम और ज्ञान की तरह ही है। पदार्थ और उसके प्रभाव - पाप, बीमारी और मृत्यु - नश्वर मन की अवस्थाएँ हैं जो कार्य करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, और फिर एक पड़ाव पर आते हैं। वे मन के तथ्य नहीं हैं। वे विचार नहीं हैं, बल्कि भ्रम हैं। सिद्धांत निरपेक्ष है। यह किसी भी त्रुटि से स्वीकार नहीं किया जाता है, लेकिन समझने पर निश्चित रहता है।

लेकिन प्रचलित सिद्धांत क्या कहते हैं? वे जोर देकर कहते हैं कि जीवन, या ईश्वर, तथाकथित भौतिक जीवन के साथ एक ही है। वे सत्य और भ्रांति दोनों को मन के रूप में, और अच्छे और बुरे को आत्मा के रूप में बोलते हैं। वे दावा करते हैं कि वह जीवन है जो भौतिक अर्थ की वस्तुगत स्थिति है, - जैसे कि वृक्ष और भौतिक मनुष्य का संरचनात्मक जीवन - और इसे एक जीवन, ईश्वर की अभिव्यक्ति मानते हैं।

यह मिथ्या विश्वास कि वास्तव में जीवन क्या है, ईश्वर के चरित्र और प्रकृति से इतना विचलित हो जाता है, कि उसकी शक्ति का सही अर्थ उन सभी के लिए खो जाता है जो इस मिथ्या से चिपके रहते हैं। ईश्वरीय सिद्धांत, या जीवन, व्यावहारिक रूप से दिनों की लंबाई में प्रदर्शित नहीं किया जा सकता है, जैसा कि पितृपुरुषों द्वारा किया गया था, जब तक कि इसका विज्ञान सटीक रूप से नहीं बताया गया हो। हमें ईश्वरीय सिद्धांत को समझ में प्राप्त करना चाहिए, और इसे दैनिक जीवन में जीना चाहिए; और जब तक हम ऐसा नहीं करते, तब तक हम विज्ञान को

और अधिक प्रदर्शित नहीं कर सकते हैं, जितना कि हम किसी वक्र को एक सीधी रेखा या एक सीधी रेखा को एक गोला कहकर ज्यामिति को पढ़ा और चित्रित कर सकते हैं।

6. 588 : 11-12 (सं:), 15-19

एक मैं, या हम के अलावा कोई नहीं है, लेकिन एक दिव्य सिद्धांत, या मन, सभी अस्तित्व को नियंत्रित करता है; ... ईश्वर की सृष्टि की सभी वस्तुएँ एक मन को दर्शाती हैं, और जो कुछ भी इस एक मन को नहीं दर्शाता है, वह झूठा और गलत है, यहाँ तक कि यह विश्वास भी कि जीवन, पदार्थ और बुद्धि दोनों मानसिक और भौतिक हैं।

7. 550 : 15-23

विचार की त्रुटि कार्रवाई की त्रुटि में परिलक्षित होती है। भौतिक और भौतिक के रूप में अस्तित्व का निरंतर चिंतन - शुरुआत और अंत के रूप में, और इसके घटक चरणों के रूप में जन्म, क्षय और विघटन के साथ - सच्चे और आध्यात्मिक जीवन को छुपाता है, और हमारे मानक को धूल में फंसा देता है। यदि जीवन का कोई प्रारंभिक बिंदु है, तो महान मैं हूँ एक मिथक है। यदि जीवन ईश्वर है, जैसा कि शास्त्रों में कहा गया है, तो जीवन भ्रूण नहीं है, यह अनंत है।

8. 95 : 30-32

भौतिक भावना अस्तित्व के तथ्यों को प्रकट नहीं करती है; लेकिन आध्यात्मिक भावना मानव चेतना को शाश्वत सत्य में ले जाती है।

9. 428 : 3-29

जीवन वास्तविक है, और मृत्यु भ्रम है। यीशु के मार्ग में आत्मा के तथ्यों का प्रदर्शन भौतिक अर्थों के सबसे गहरे दर्शन को सामंजस्य और अमरता में बदल देता है। इस सर्वोच्च क्षण में मनुष्य का विशेषाधिकार हमारे मास्टर के शब्दों को साबित करना है: "कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा।" झूठे न्यासों और भौतिक साक्ष्यों के बारे में विचार करने के लिए ताकि आध्यात्मिक तथ्य सामने आ सकें — यह महान प्राप्ति है जिसके माध्यम से हम असत्य को मिटा देंगे और सत्य को स्थान देंगे। इस प्रकार हम मंदिर, या देह को सच में स्थापित कर सकते हैं, "जिसका निर्माता और निर्माता भगवान है।"

हमें अस्तित्व को संरक्षित करना चाहिए, न कि "अज्ञात भगवान को" जिसे हम "अज्ञानतावश पूजा करते हैं," लेकिन शाश्वत बिल्डर, हमेशा के लिए पिता, जीवन के लिए जो नश्वर भाव क्षीण हो सकता है और न ही नश्वर विश्वास नष्ट हो सकता है। हमें मानव की गलतफहमियों को दूर करने और उन्हें जीवन के साथ बदलने की क्षमता का एहसास करना चाहिए जो आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं।

महान आध्यात्मिक तथ्य को सामने लाना चाहिए कि मनुष्य है, पूर्ण और अमर नहीं। हमें हमेशा अस्तित्व की चेतना को धारण करना चाहिए, और जल्द ही या बाद में, मसीह और ईसाई विज्ञान के माध्यम से, हमें पाप और मृत्यु पर नियंत्रण रखना चाहिए। मनुष्य की अमरता के प्रमाण अधिक स्पष्ट हो जाएंगे, क्योंकि भौतिक विश्वासों को छोड़ दिया जाता है और होने के अमर तथ्यों को स्वीकार किया जाता है।

10. 14 : 5-22

हम "दो स्वामी की सेवा नहीं कर सकते।" "प्रभु के साथ वर्तमान" होना, केवल भावनात्मक परमानंद या विश्वास नहीं है, बल्कि वास्तविक प्रदर्शन और जीवन की समझ है जैसा कि क्राइस्टियन साइंस में सामने आया है। "प्रभु के साथ" होना ईश्वर के कानून का पालन करना है, परमात्मा द्वारा पूर्ण रूप से शासित होना, - आत्मा द्वारा, पदार्थ द्वारा नहीं।

एक क्षण के लिए सचेत हो जाएं कि जीवन और बुद्धि विशुद्ध रूप से आध्यात्मिक है, - न तो भौतिक में और न ही भौतिक के साथ, - और शरीर तब कोई शिकायत नहीं करेगा। यदि बीमारी में विश्वास से पीड़ित हैं, तो अचानक आप खुद को स्वस्थ पाएंगे। शरीर को आध्यात्मिक जीवन, सत्य और प्रेम द्वारा नियंत्रित किए जाने पर दुःख को आनंद में बदल दिया जाता है। इसलिए यीशु की प्रतिज्ञा की आशा पूरी हुई: "जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा ... क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं," — [क्योंकि अहंकार शरीर से अनुपस्थित है, और सत्य और प्रेम के साथ मौजूद है।]

दैनिक कर्तव्यों

मेरी बेकर एंड्री द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6